लोक और शास्त्र
जनजातीय साहित्य

सम्पादक

डॉ. अनुशब्द

लोक और शास्त्र
जनजातीय साहित्य

सम्पादक

डॉ. अनुशब्द

सह-सम्पादक

डॉ. चारु गोयल

सम्पादन-सहयोग

नन्दिता दत्त

गोपाल कुमार पाण्डेय

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
शाखा
अशोक राजपथ, पटना 800 004
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com
sales@vaniprakashan.in

LOK AUR SHASTRA : JANJATIYA SAHITYA
Edited by Dr. Anushabda

ISBN : 978-93-5229-379-7
Social Studies/Culture

31/12/16

© 2017 सम्पादक
प्रथम संस्करण
मूल्य : ₹ 495

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली 1100 95 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

हाशिए का समाज : अस्मिता के सवाल एवं चुनौतियाँ 9
(प्रो. शरणकुमार लिम्बाले का वक्तव्य)

समकालीन विमर्श और आदिवासी समाज
—रवि कुमार गौड़ 15

आदिवासी साहित्य : सृजन की दुश्वारियाँ
—प्रमोद मीणा 32

हमारा आदिवासी जीवन
—डॉ. *सी.एल. धिमान* 50

लोक-संस्कृति के संवाहक आदिवासी केन्द्रित उपन्यासों में नारी की स्थिति
—गजेन्द्र भारद्वाज 58

हिन्दी की दलित और आदिवासी कविताओं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव
—ऋतिका गुप्ता 63

भारत में आदिवासियों की शिक्षा-व्यवस्था
—गोपाल कुमार 68

डॉ. भूपेन हाजरिका के गीतों में जनजातीय समाज एवं जीवन
—चन्दना शर्मा 73

हो जनजाति : भाषा एवं साहित्य
—डॉ. अनुशब्द 81

जनजातीय समाज व साहित्य में नारी की स्थिति
('लिङ्गझिक' उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में)
—नन्दिता दत्त 101

आदिवासी : उद्भव, संघर्ष और अस्तित्व
—जशोधरा बोरा 107

अनुशब्द

लोक साहित्य और असम का जनजातीय जीवन
(तिवा/लालुंग जनजाति के विशेष सन्दर्भ में)
—प्रणव कुमार नाथ 111

आदिवासी जीवन और साहित्य
—स्वाति रेड्डी 116

लोक और शास्त्र : हिन्दी में जनजाति सम्बन्धी उपन्यास
—बनश्री कलिता 124

'शव कटा मानुह' : मनपा जनजातीय जीवन की दलील
—उत्तम बरुवा एवं जितु गोगोई 128

भूमण्डलीकरण की छाँव में भील जनजाति की सामाजिक स्थिति
—माधुर्य डेका 133

असमिया उपन्यास में जनजातीय समाज और जीवन के प्रतिफलित रूप
—प्रणिता गगै एवं प्रांजल दत्त 137

जनजातीय लोक-साहित्य और जनजातीय समाज में नारी की स्थिति
—चन्दन चौहान 141

येछे दरजे ठंचि रचित उपन्यास 'शव कटा मानुह' में जनजातीय जीवन
—गीता माला बरा 147

'मिरि जीयोरी' उपन्यास में चित्रित मिसिंग जनजातीय : समाज और संस्कृति
—सरोज पेगु 153

बंजारा जनजाति : लोकगीत
—सुरेश पवार 163

'नगाड़े की तरह बजते शब्द' में आदिवासी सवाल
—जिनाक्षी चुतीया 170

असमिया उपन्यासों में प्रतिफलित जनजातीय चेतना
—मनोज कुमार श्रीवास्तव 177

अनु2106